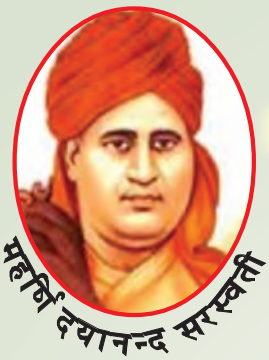

200वीं
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

मार्च 2025 वर्ष 29, अंक 03 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2081 ❑ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल: tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

ट्रस्ट प्रधान, आर्यरत्न, पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी के आशीर्वाद से

टंकारा ऋषि बोधोत्सव 2025 सौल्लास सम्पन्न

दिनांक 20 फरवरी से 26 फरवरी 2025 तक ऋषि जन्म भूमि टंकारा में ऋषि बोधोत्सव पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में लगभग 2000 आर्य जनों ने सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा को बढा़या जिसमें अधिकतर स्थानीय लोग ही थे।

इस वर्ष भी पिछले वर्षो की भांति इस ऋषि बोधोत्सव को आर्य सन्देश टी वी चैनल के माध्यम से पूरे विश्व में देखा गया और इसके अतिरिक्त इसे अन्य 20 चैनलों पर भी देखा गया। तकनीकी व्यवस्थाओं से पता लगा है कि दिनांक 26-02-2025 के कार्यक्रमों को कुल मिलाकर लगभग 97,000 ऋषि भक्तों ने देखा। उनमें बहुत से अतिवृद्ध थे जो अभी तक टंकारा नहीं गए थे और टंकारा जाने का उनका स्वप्न पूरा नहीं हो रहा था। कुछ महानुभाव ऐसे भी थे जो सीबीएससी की परीक्षा प्रारम्भ होने के कारण टंकारा नहीं जा सके। सभी ने इस कार्यक्रम की बहुत प्रशंसा की है। ऋग्वेद पारायण यज्ञ 20 फरवरी 2025 से टंकारा स्थित उपदेशक विद्यालय के आचार्य रामदेव जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। दिनांक 20 फरवरी से 26 फरवरी तक प्रात: 6 बजे से टंकारा में पधारे आर्य जनों एवं स्थानीय ऋषि भक्तों द्वारा श्री देव जी आर्य (टंकारा) के नेतृत्व में प्रभात फेरी निकाली गई। इसी अवसर पर दिनांक 24, 25, 26 फरवरी 2026 को योग एवं स्वास्थ्य सत्र का आयोजन स्वामी शान्तानन्द जी के नेतृत्व में बृजमोहन मुंजाल योग साधाना केन्द्र में प्रात: 5 बजे से हुआ जिसमें टंकारा में पधारे हुए आर्य जनों ने सम्मिलित होकर लाभ लिया।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आलस्य त्याग

- पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, ट्रस्ट प्रधान महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (जन्मभूमि)

व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्र के उत्थान में सबसे बड़ा बाधक शत्रु मनुष्य का आलस्य है। किसी भी कार्य को प्रमादवश निरन्तर टालते रहना उसे ना करने के बहाने बनाना ही आलस्य है। कर्महीनता आलस्य का दूसरा नाम है। योगेश्वर कृष्ण ने विषाद में फंसे अर्जुन को महाभारत के युद्ध के लिए अर्थात् कर्त्तव्य कर्म करने की प्रेरणा देते हुए कर्महीनता को पापाचार की श्रेणी में रखा था। ऋग्वेद में अकर्मा दस्युः। ऋ.10/22/8 का संदेश देकर कर्म ना करने वाले आलसी को दस्यु कहा है। महर्षि देव दयानन्द भी आर्योद्देश्यरत्नमाला में मनुष्य को परिभाषित करते हुए **''मनन् शील विचारवान होकर कार्य करने वाले को मनुष्य कहते हैं।''** अर्थात् मननशील होकर कर्म करना मनुष्यता का प्रथम लक्षण बताया गया है। मननशील होना मनुष्य के लिए अर्थात् पुरुषार्थी उद्यमी वा कर्मशील होना पुरुष का लक्षण है। कर्महीन आलसी मनुष्य वा पुरुष कहलाने का अधिकारी नहीं है।

मनुष्यत्व मनुष्य का, पुरुषार्थ उद्यम पुरुष का धर्म है। यदि मनुष्य वा पुरुष में से उसके धर्म मनुष्यत्व वा पुरुषार्थ उद्यम परिश्रम को निकाल दिया जाए तो ऐसा आलसी व्यक्ति धर्मविहीन होकर मनुष्य के रूप में पशु की भांति भार बनकर धरती पर विचरण करता है।

पाश्चात्य विद्वान् टेलर ने आलस्यमय जीवन व्यक्ति की मृत्यु बतलाया तो वहीं सुकरात ने आलस्य में जीवन बिताना आत्महत्या के समान कहा है। महात्मा गांधी ने भी ''ईश्वर उसी की सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करता है'' कहकर कर्म को प्रधानता दी है।

हम लोग अपने मन में कर्महीनता वा आलस्य के भी कई बहाने गढ़ लेते हैं जिसमें 1. इन्द्रियों के वशीभूत प्रमादी हो जाना, 2. कर्म को बंधन का कारण मानकर कर्महीन हो जाना प्रमुख हैं। महर्षि दयानन्द ने भी कर्ता को परिभाषित करते हुए आर्योद्देश्यरत्नमाला में लिखा ''जो स्वतन्त्रता से कर्मो को करने वाला है, अर्थात् जिसके स्वाधीन सब साधन होते हैं वह कर्ता कहलाता है। यहा स्वाधीन साधन का तात्पर्य स्पष्ट है कि किसी कार्य को करने के लिए आवश्यक साधन कर्ता के स्वयं के अधीन न हों अपितु मनुष्य स्वयं इन्द्रियों का दास बन जायेगा। अर्थात् ऐसे आलसी प्रमादी अकर्मा मनुष्य के आधीन साधन नहीं है अपितु वह स्वयं उन साधनों के अधीन हैं। ऐसी आलसी मनुष्य मन इन्द्रियों रूपी घोड़े के पैरों में लगी नाल की भाँति निरन्तर दंड का भागी होता है।

अकर्मण्यता वा आलस्य का दूसरा प्रमुख कारण कर्म को बंधन का कारण मान लेता है। जबकि सच्चाई यह है कि परमपिता परमेश्वर सर्वशक्तिमान न्यायकर्ता प्रत्येक मनुष्य के प्रत्येक शुभ वा अशुभ कर्म का पुरस्कार वा दंड नियति भाग्य वा प्रारब्ध के रूप में देते हैं। महाभारतकार भी लिखते हैं हमें अपने प्रत्येक शुभ अशुभ कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। इससे तो स्पष्ट हुआ कि मनुष्य द्वारा जीवन में किए गए शुभ कर्म ही उसकी मुक्ति का कारण बनते हैं। इसीलिए वेद भगवान् ने आदेश दिया कि 'आलस्य, प्रमाद और बकवास हम पर शासन ना करे।'

आलस्य वह दीमक है जो मनुष्य को अंदर से खोखला कर देता है। मनुष्य जो भी नित योजनाएं बनाता है वह आलस्य के कारण पूरी नहीं कर पाता। आलस्य मनुष्य पर अंदर से आक्रमण करने वाला वह शत्रु है जो उसे अंदर से खोखला कर देता है। प्रतिकूल हवा का एक झोंका आलसी मनुष्य को खोखले ढूंढ की भांति गिरा देता है।

आलस्य प्रमाद, अकर्मण्यता को त्यागने और कर्म करने की प्रेरणा देते हुए वेद भगवान कहते हैं अर्थात् यदि कर्म मेरे दायें हाथ में तो विजय मेरे बायें हाथ में रखी हुई है। वैसे भी पूर्ण पुरुषार्थ के उपरांत की गई प्रार्थना को ही ईश्वर स्वीकार करते हैं और बिना पुरुषार्थ की गई प्रार्थना व्यर्थ होती है। ऋग्वेद में कहा गया है देवता भी पुरुषार्थी को ही पसन्द करते हैं। मनुष्य को सौभाग्यशाली बनने के लिए आलस्य त्याग कर पुरुषार्थ करना चाहिए।

- पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी के साथ अनऔचपारिक बैठक में चर्चा के कुछ अंश

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मत में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 12000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदकः- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **अजय सहगल** (मन्त्री)

प्रतिदिन यज्ञ करना कितना आवश्यक

आर्य परिवारों में जन्मे बालक जन्म से ही माता-पिता को प्रातः एवं सायं यज्ञ/ संध्या करते देखते हुये बड़े होते हैं और माता पिता की आज्ञानुसार किशोरावस्था तक पहुंचते-पहुंचते स्वयं भी उस प्रणाली के आदि हो जाते हैं और माता-पिता के साथ बैठकर इस नित्यकर्म को निभाते हैं और इसी परम्परा को निभाते हुये रविवार साप्ताहिक सत्संगों में भी सम्मिलित होते हैं और वहां आये हुये महापुरुषों एवं विद्वानों के प्रवचनों को सुनते-सुनते युवावस्था तक पहुंच जाते हैं, इस स्थिति पर पहुँचने के उपरान्त जहां उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा भी पूर्ण कर ली होती है और माता-पिता एवं परिवार से प्राप्त वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत हो चुके होते हैं। जीवन के इस मोड़ पर पहुंचकर वह तर्क-वितर्क से बुद्धि में मन्थन करते हैं और ना जाने कितने ही प्रश्न उनके मन में बिना उत्तर के रह जाते हैं। कुछ के उत्तर आयु और सामाजिक अनुभव से समय के साथ उनको मिल जाते हैं। इसी प्रकार कुछ युवकों ने मुझसे अपनी बुद्धि एवं विवेक से किये कुछ प्रश्नों को उदाहरणार्थ यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ–क्या प्रतिदिन यज्ञ करना अधिक आवश्यक है या फिर मनुर्भव की परिभाषा को सामने रखते हुये एक अच्छा मनुष्य बनना अधिक आवश्यक है? या फिर हम युवक प्रतिदिन यज्ञ तो करें लेकिन मांसाहार का सेवन करें, झूठ एवं छल से कमाये गये धन का प्रयोग करें, किसी दुःखी के दुःख में दुःखी न हो, किसी के सहायक न बनें, लेकिन यज्ञ अवश्य करें। समझायें क्या उचित है!

इसके विपरीत प्रतिदिन यज्ञ व संध्या न करें, लेकिन उपरोक्त कार्य न करते हुये अच्छा मनुष्य अवश्य बने इस स्थिति में युवकों ने स्वयं ही उत्तर दिया कि आप की धारणा यह रही होगी कि जिस मनुर्भव की बात हम युवक कर रहे हैं उस मनुष्यता को प्राप्त करने के लिये यज्ञ ही हमें प्रेरणा देता है, हमारा सहायक बनता है।

युवकों ने आगे कहा-लेकिन इसके विपरीत हम ऐसे कई महानुभावों को जानते हैं, जो आर्य परिवारों से है, आर्य मर्यादाओं से ओत-प्रोत है पर किसी कारण वश प्रतिदिन यज्ञ नहीं करते लेकिन वेद प्रचार एवं आर्यसमाज की समाजसेवा के कार्यों में बढ़-चढ़कर दान एवं सहयोग देते हैं और मन, कर्म और विचारों से पूर्ण मनुष्यता को प्राप्त किये हुये आर्य भी दिखते हैं या यह कहूं कि दिखते ही नहीं, हैं भी। युवक यह भी समझते हैं कि आप वेद की बात करते हुये प्रतिदिन यज्ञ की आवश्यकता पर बल दे रहे हैं परन्तु देव दयानन्द जो कि इस धरा पर वेदों के सबसे सच्चे प्रचारक एवं प्रसारक हुये हैं और जिन 10 नियमों को आधार बनाकर आर्यसमाज की उन्होंने स्थापना की उन 10 नियमों में कहीं भी प्रतिदिन यज्ञ करना अनिवार्य नहीं कहा है।

जो व्यक्ति उन 10 नियमों के आधार पर, सब सत्य विद्याओं का आदिमूल परमेश्वर है और उसी की उपासना करने योग्य है, वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, मानता है सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में उद्यत रहता है, सारे कार्य धर्मानुसार करता है, संसार का उपकार और उन्नति करने में सहायक है, सबसे प्रीतिपूर्वक यथायोग्य वर्तता है, अपनी ही उन्नति न कर सबकी उन्नति में सहायक होता है, लेकिन यज्ञ नहीं करता क्या वह आर्य कहलाने का अधिकारी नहीं? क्या उसका यह सोचना कि मैं यज्ञ न करूं और बाकी सभी नियमों का पालन अपनी स्वतन्त्र समझ से करूं क्योंकि आर्यसमाज के दसवें नियम में सभी को हितकारी नियम पालने में सर्वथा स्वतंत्र रहना चाहिये। क्या ऐसा सोचना गलत है? कृपया उत्तर देवें। इन युवकों की बातें सुनकर पहले मुझे यह लगा कि शायद यह किसी दूसरे धर्म या सम्प्रदाय से हैं और आर्यसमाज के नियमों एवं प्रतिदिन यज्ञ करने की धारणा की खिल्ली उड़ा रहे हैं और आर्यसमाजी परिवार से होने एवं वैदिक मान्यताओं से ओत-प्रोत होने का ढोंग रच रहे हैं। युवक कोई भी हो लेकिन किसी भी आर्य परिवार के युवक के लिए मस्तिष्क में ऐसे प्रश्न का विचार आना स्वाभाविक है। आज का उच्चशिक्षा प्राप्त युवक तर्क पर आधारित बात करता व मानता है। इस घटना के उपरान्त मैंने निश्चय किया कि अपने सुधी पाठकों, आर्यसमाज के विद्वानों एवं संन्यासीवृन्दों से इसका उपयुक्त उत्तर पत्रों के द्वारा या लेख के रूप में प्राप्त किया जाये। मैं आशा रखता हूँ कि इस विषय में ऐसे भटके हुये युवकों का मार्गदर्शन करें।

अजय टंकारावाला

मैं यज्ञ करूं

प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय हूयसे।
मरुद्भिरग्न आगहि। -सामवेद

मनुष्य का कर्तव्य है कि अपनी प्रत्येक इन्द्रिय से यज्ञ=उत्तम कर्मों का अनुष्ठान करे। यही उसका कर्तव्य है। उसकी यही दिनचर्या होनी चाहिये। इसी बात को मन्त्र का 'चारु' शब्द व्यक्त कर रहा है। हमारा कोई भी कार्य हिंसा की प्रवृत्ति वाला न हो। कार्य की श्रेष्ठता व यज्ञरूपता की यही कसौटी है। 'अ-ध्वर'=नहीं हिंसा। हमारे कार्य अधिक से अधिक प्राणियों का भला करनेवाले हों। परन्तु मनुष्यमात्र का यह अनुभव है कि इन इन्द्रियों पर आसुरी वृत्तियों का आक्रमण होता है और ये इन्द्रियां यज्ञों को छोड़ ध्वंसक कार्यों में लग जाती हैं। सो यज्ञ में प्रवृत्त इन इन्द्रियों की रक्षा के लिये हम प्रभु को पुकारते हैं। प्रभु का स्मरण ही आसुरी वृत्तियों के दूर करने का उपाय है। मन्त्र में उस प्रभु से प्रार्थना है कि हे प्रभो! (मरुद्भिः) प्राणों के साथ (आगहि) आइये, हमें प्राप्त हूजिये। इस प्रकार वेद का यह संकेत स्पष्ट है कि इन्द्रिय रक्षा के लिये प्राणों की साधना ही उपाय है। उपनिषदों का कथानक है कि असुर सब इन्द्रियों को आक्रान्त कर परास्त कर सके। पर जब वह प्राणों पर आक्रमण करने लगे तो इस प्रकार उनका ध्वंस हो गया जैसे कि पत्थर से टकराकर मिट्टी के ढेले का। सो हम प्राणों की साधना द्वारा इन्द्रियों का संयम कर यज्ञ को नष्ट न होने दें। भोगवाद क्षणिक प्रीति का हेतु होता हुआ अनुपादेय है। प्राण साधना द्वारा इन्द्रिय संयम ही श्रेयमार्ग है। विरले धीर ही इसे अपनाते हैं। हम भी उन्हीं विरले धीरों में से एक होते हुए इस मन्त्र के ऋषि 'मेधातिथि' बनें। भावार्थ-प्राण साधना से जितेन्द्रिय बन जीवन को यज्ञमय बनाओ।

(पृष्ठ 1 का शेष)

दिनांक 24-02-2025 को टंकारा गुरूकुल के ब्रह्मचारियों का कार्यक्रम श्री अजय सहगल जी की अध्यक्षता में हुआ जिसके संचालक श्री देवजी आर्य थे।

दिनांक 25-02-2025 को प्रात: 8.00 बजे से टंकारा ट्रस्ट की मुख्य यज्ञशाला में यज्ञ आरम्भ हुआ। इस अवसर पर मुख्य यजमान के रूप में श्री योगेश मुंजाल, श्री सुरेश मुंजाल, श्रीमती रमा मुंजाल श्री एस के शर्मा, श्री विपिन भाई पटेल सपत्नीक, श्री मावजी भाई एवं श्री महेश वेलाणी उपस्थित थे। आचार्य रामदेव जी ने अपने प्रवचनों से यज्ञशाला में उपस्थित ऋषि भक्तों को लाभान्वित किया। तदुपरान्त आचार्य विनय वेदालंकार, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय बेतालघाट, नैनीताल, उत्तराखण्ड द्वारा सारगर्भित प्रवचन दिया गया जिससे पधारे हुए सभी ऋषि भक्त लाभान्वित हुए।

दोपहर 2 बजे से सांय 4 बजे तकयुवा सम्मेलन एवं पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सौराष्ट्र के स्कूलों एवं कालेजों के विद्यार्थियों के लिए टंकारा ट्रस्ट की ओर से बॉलीबाल प्रतियोगिता, की विजयी टीमों को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त उपदेशक विद्यालय के ब्रहमचारियों एवं आर्यवीर दल टंकारा, आर्य वीर दल ध्रांगध्रा एवं अन्य आर्य वीर दलों के आर्य वीरों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन एवं वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर संदेशात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। प्रतियोगियों को ट्रस्ट की ओर से नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिये गए। जिसका संचालय श्री देवजी भाई आर्य ने किया।

सायं 5 बजे से टंकारा ट्रस्ट की मुख्य यज्ञशाला में पुन: यज्ञ आरम्भ हुआ। जिसमें विभिन्न प्रान्तों से पधारे ऋषि भक्तों में से मुख्य यजमान बने। यज्ञोपरान्त आचार्य रामदवे जी द्वारा प्रवचन दिया गया।

दिनांक 25.02.2025 को रात्रि 8 बजे श्री हेमन्त भाई जोशी (गुजरात) द्वारा ऋषि के प्रति श्रद्धांजलि संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता कार्यकारी प्रधान श्री योगेश मुंजाल जी ने की। गुजराती गायक होने के कारण इस कार्यक्रम में हजारों स्थानीय महानुभावों ने भाग लिया और कार्यक्रम से लाभान्वित हुए ।

दिनांक 26.02.2025 प्रात: 6 बजे से टंकारा में पधारे आर्य जनों एवं स्थानीय ऋषि भक्तों द्वारा श्री देव जी आर्य (टंकारा) के नेतृत्व में प्रभात फेरी निकाली गई। तदुपरान्त प्रात: 8 बजे से मुख्य यज्ञशाला में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य यजमान श्री योगेश मुंजाल, श्री सुरेश मुंजाल, श्रीमती रमा मुंजाल श्री एस के शर्मा, श्री विपिन भाई पटेल सपत्नीक, श्री मावजी भाई एवं श्री महेश वेलाणी, श्री अरूण अब्रोल, श्री अविनाश भट्ट एवं पिछले एक सप्ताह से चल रहे ऋग्वेद पारायण यज्ञ में बने यजमानों ने क्रमश: यज्ञवेदी पर उपस्थित होकर अपनी आहुति दीं। सर्वप्रथम श्री सुरेश मुंजाल एवं श्रीमती रमा मुंजाल ने ब्रह्मा का वरण कर उन्हें तिलक लगाया। तदुपरान्त अग्निद्धान कर यज्ञ आरम्भ किया। ऋग्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति प्रात: 10.00 बजे सम्पन्न हुआ। आचार्य विनय वेदालंकार, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय बेतालघाट, नैनीताल, उत्तराखण्ड द्वारा सारगर्भित प्रवचन दिया गया जिससे पधारे हुए सभी ऋषि भक्त लाभान्वित हुए।

तदुपरान्त श्री सुरेश मुंजाल एवं श्रीमती रमा मुंजाल सभी की शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद ग्रहण करते हुए धवजस्थल पर पहुंचें। ट्रस्ट की ओर से एवं अन्य पधारे हुए प्रतिनिधियों एवं आर्य महानुभावों ने उन्हें फूलमाला अर्पित कर उनका स्वागत किया। माननीय सुरेश मुंजाल जी

द्वारा धवजारोहण किया गया। इस अवसर पर आर्य वीर दल द्वारा धवजगीत गाया गया। तदुपरान्त सुरेश मुंजाल जी ने ओ३म् ध्वज दिखाकर शोभायात्रा का शुभारम्भ कराया जोकि टंकारा गॉव की गलियों में होते हुए पुनः टंकारा परिसर में पहुंची।

Change The Way You Think- One day a rich father took his son to a trip to the country with the firm purpose of showing him how poor people can be. They spent a day and a night in the farm of a very poor family. When they got back from their trip the father asked his son, "How was the tip?" "Very good Dad!" replied his son. "Did you see how poor people can be?" the father asked. "Yeah!" "And What did you learn?"

The son answered, "I saw that we have a dog at home, and they have four. We have a pool that reaches to the middle of the garden; they have a creek that has no end. We have imported lamps in the garden; they have the stars. Our patio reaches to the front yard, they have a whole horizon." When the little boy was finishing, his father was speechless. His son added, "Thanks, Dad, for showing me how poor we are!"

- Forwarded by Yogesh Munjal

ऋग्वेद पा
ऋग्वेद पारायण

एक प्रेरणा परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 110 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज की आवश्यकता है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी। **एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 20,000/- रुपये है।** आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदकः- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **अजय सहगल** (मन्त्री)

ऋषि बोधोत्सव - टंकारा
ऋषि वंदना
।। ओ३म् ।।
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती

આર્યસમાજ રાજકોટ
આપનું હાર્દિક સ્વાગત કરે છે

महर्षि दयानन्द सरस्वती
200

આર્યસમાજ રાજકોટ
આપનું હાર્દિક સ્વાગત કરે છે

आर्य समाज
આર્યવીર દલ
આર્યસમાજ-રાજકોટ

पवित्र नदी-स्नान और तीर्थ-यात्रा

❑ स्व. अशोक कौशिक

अधिकांश भारतवासियों में पवित्र नदियां यथा-गंगा, यमुना, गोदावरी, कृष्णा, काबेरी, नर्मदा, सरयू आदि नदियों में स्नान करने से पाप से मुक्ति प्राप्त होने की भावना बड़ी प्रबल है। मानव-मात्र यह भी भली भांति जानता है कि पापकृत्य का फल दु:ख और पुण्यकृत्य का फल सुख है। इतना सब- कुछ जानने पर भी मनुष्य की प्रवृति बड़ी विचित्र है। इस प्रवृति को प्रकट करने वाला संस्कृत का प्रसिद्व श्लोक है-

फलं पुण्यस्य चेच्छन्ति पुण्यं नेच्छन्ति मानवा:।
फलं पापस्य नेच्छन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नत:॥

मनुष्य पुण्य का फल तो चाहता है किन्तु पुण्य करना नही चाहता। इसी प्रकार वह पाप का फल तो कदापि नहीं चाहता परन्तु यत्नपूर्वक पाप में रत रहता हैं।

कर्म करते समय मानव का अन्तर्मन यह चाहता है कि वह पाप कर्म कर रहा है अथवा उसने पाप कर्म किया है, अत: उसके फल से बचने के लिये उसने सरल और काल्पनिक उपयोग को भी गढ़ लिया है। किसी पवित्र नाम वाली नदी, सरोवर, संगम अथवा समुद्र में स्नान कर लेने से, वह सफलता है कि, उसको पापों से मुक्ति मिल जायेगी और उसे अपने पाप कर्मो का फल भोगने को नहीं मिलेगा। चोरी, हिंसा, हत्या कुछ भी कर लो और फिर गंगा आदि में स्नान कर लो तो सारे पाप धुल जायेंगे। कुछ लोगों ने तो इस पवित्र स्नान का सरलतम उपाय निकाल लिया है। उनके अनुसार घर पर बैठ कर-

गंगा गंगेति यो बूयात् योजनानां शतेरपि।
मुच्यते स पापेभ्य: विष्णुलोकं सगच्छति॥

सौ योजन दूर से भी आप स्नान के समय 'गंगा' आदि पवित्र नदियां का नामोच्चार कर लीजिये, आपको उसी से गंगा स्नान का फल प्राप्त हो जायेगा। आपकी पाप से मुक्ति हो कर आप विष्णुलोक के भागीदार बन जायेंगे।

जबकि तथ्य तो यह है कि किसी पवित्र नदी का नामोच्चार मात्र तो क्या आप उस नदी में स्नान कर लीजिये, तब भी आपको आपके किये पापों से मुक्ति नहीं मिलेगी हां, यदि जल स्वच्छ हो और आपने उचित विधि से स्नान किया हो तो उससे आपके शरीर में चिपटे मैल से अवश्य मुक्ति मिल जायेगी। नदी स्नान से पाप का छूटना अथवा आत्मा का पवित्र होना सर्वथा असम्भव है।

महाभारत उद्योगपर्व में महाराज युधिष्ठिर के प्रश्न के उत्तर में भीष्म ने कहा- 'युधिष्ठिर। यदि तुम आत्मशुद्धि चाहते हो तो आध्यात्मिक नदी में स्नान करो। उस अध्यात्म नदी के दो भाग है। 'संयम' और 'पुण्य', उसमें सत्यरूपी बल है, 'शील' अर्थात् सदाचार उसका किनारा है, उसमें दयारूपी तरंगे उठती है, तुम उसी में स्नान करो। अर्थात इनका पालन करो। जल से अन्तरात्मा कमी शुद्ध नहीं होता। इसी तथ्य को मनु महाराज ने इस प्रकार से दोहराया है-

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मन: सत्येन शुध्यति।
विद्या तपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥

अर्थात जल से शरीर शुद्ध होते है, मन सत्य से शुद्ध होता है, विद्या और तप से आत्मा शुद्ध होता है और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि जल वह चाहे किसी भी नदी, संगम अथवा सरोवर का क्यों न हो, उससे शरीर, वस्त्र और स्थान आदि शुद्ध होते है। गंगा के विषय में प्रचलित है कि उसका जल अनेक वर्ष विकृत नहीं होता, सड़ता नहीं, शुद्ध रहता है। इसका कारण यह है कि गंगा का उद्गम पर्वत उपत्यका हैं। हिमालय की उपत्यकाओं से प्रवाहित होने के कारण गंगा का जल औषधमूल तथा अन्य अनेक लाभकारी खनिज पदार्थो के सम्पर्क में प्रवाहित होता है। इसके कारण उस जल में औषधीय गुण समाविष्ट हो जाते है और उसके कारण उसका जल शुद्ध और पवित्र हो जाता है और अधिक दिनो तक टिकने वाला और विकृत न होने वाला बन जात है। किन्तु जब वहीं गंगा मैदानी मार्गो से होता हुआ कानपुर, आगरा जैसे नगरों के पास से प्रवाहित होता है, वहां वह जल नगर, कस्बों गन्दे नाले और फैक्टरियो-कारखानों से प्रवाहित होने वाले अनके विषैले रसायनों एवं अवशेषों से युक्त पदार्थो के सम्मिलिन से वह सर्वथा अशुद्ध हो जाता है। यही स्थिति अन्य नदियों तथा पुष्कर, करूक्षेत्र आदि सरोवरों की है। जिस प्रकार नदियां में अस्थिविसर्जन किया जाता है कि उसी प्रकार इन कुछ सरोवरों में भी अस्थियों अथवा भस्म का विसर्जन करने से उनका जल भी अपवित्र ही नहीं अपितु अशुद्ध भी हो जाता है। यह प्रथा नितान्त अशुद्ध है क्योंकि आत्मा की शान्ति और सद्गति उसके कर्मो के अनुसार ईश्वरीय व्यवस्था से होगी, पवित्र जल में अस्थि अथवा भस्म विसर्जन से नहीं।

इसी प्रकार के सरल उपायों में पुराणपन्थियों ने विशेष मुहूर्त अथवा दिवस-मास आदि भी निर्धारित कर लिये हैं। जिससे उस समय या तिथि, मास अथवा मुहूर्त में स्नान करने वाले की पापों से मुक्ति हो जाती है, ऐसी उनकी धारणा है अथवा बारह वर्षो के अन्तराल में कुछ नदियों अथवा संगमो को निर्धारित किये जाने वाले कुम्भ स्नान की महिमा तो अपार बताई जाती है, तदापि उन अवसरों पर स्नान से पाप से मुक्ति की बात तो भगवान ही जाने किन्तु यह देखने सुनने में अवश्य आता है कि ऐसे अवसरों पर अनेक स्नानार्थी दुर्घटनावश उस स्थान पर जलनिमग्न होकर प्राणों से अवश्य मुक्ति पा लेते है। यह संख्या नगण्य नहीं होती है। तीर्थ-यात्रा के अवसर पर होने वाली दुर्घटनायें भी इसी क्रम में आती है। भीड़ बढ़ जाने पर जन-संकुल की अफरातफरी भी इसमें सहयक होती है।

इसी प्रकार सामान्य जन की यह भी धारणा बन गई है कि तीर्थ-यात्रा करने से पुण्य की प्राप्ति और पापों की निवृति होने से पापों का कुफल भोगने से मुक्ति मिल जाती है। इस कारण हिन्दू यदि चारों धामों की यात्रा करते है तो मुसलमान मक्का मदीना जाकर हज यात्रा करते है। वहां शैतान को पत्थर मारने की क्रिया भी होती है। यही स्थिति विभिन्न मत-संप्रदायों की भी है। किन्तु क्या इससे किए एक की भी पाप से मुक्ति प्राप्त कर ली जाने के विषय में भी सुना-देखा नहीं गया।

पवित्र स्नान की ही भांति तीर्थ-यात्रा के विषय में भी यही स्थिति है। जिन साधनों से मानव तर जाता है, पार हो जाता है, उन साधनों का नाम तीर्थ है। अथर्व वेद में कहा है-

तरन्ति येस्तानि तीर्थानि। तीर्थस्तरन्ति प्रव्रतो महीरिति।

इस व्याख्या के अनुसार विद्या, सत्संग, सत्यभाषण, तप, ब्रह्मचर्य, गुरूजन और महापुरूष आदि इसी लिये तीर्थ कहे जाते है

(शेष पृष्ठ 15 पर)

टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिए आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय 20,000/- रुपये देवें

गौ-दान : महा-दान–उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों की पर्याप्त मात्रा में दूध की व्यवस्था हेतु एक गऊदान करें अथवा 75,000/- रुपये की सहयोग राशि गऊ हेतु देवें।
(तीन व्यक्ति मिलकर भी 25,000/- प्रति व्यक्ति भी दे सकते है।)

गऊ पालन एवं पोषण हेतु 12,000/- रुपये का हरा चारा एवं पौष्टिक आहार की व्यवस्था (एक गऊ का वार्षिक व्यय)

1000/- रुपये की सहयोग राशि देकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि के सहयोगी सदस्य बनें। यह राशि आपको प्रतिवर्ष देनी होगी। इसलिए अपना पूरा पता अवश्य लिखवायें।
जो दान देवें उसके अतिरिक्त यह 1000/- रूपये राशि अवश्य देवें।

श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई-कढ़ाई केन्द्र की बेटियों द्वारा बनाए गए सामान को क्रय करके सहयोग कर सकते हैं।

ब्रह्मचारियों के एक सत्र का भोजन 20,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर।

ऋषि बोधोत्सव पर 1,50,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर एक सत्र के भोजन में सहयोग

20,000/- रुपये की सहयोग राशि प्रति वर्ष किसी एक दिन का (जन्मदिवस अथवा स्मृति दिवस) ब्रह्मचारियों का भोजन देकर सहयोग कर सकते है।

ब्रह्मचारियों के पहनने हेतु सफेद कपड़ा एवं दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं देकर

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80 G के अन्तर्गत मान्य है। एवम् C.S.R. दान प्राप्त करने हेतु पंजीकृत।

यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **"श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा"** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0015300 में जमा करा सकते हैं अथवा दिए गए क्यू.आर.कोड (YES Bank) पर स्कैन करके राशि जमा करा सकते है। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें।

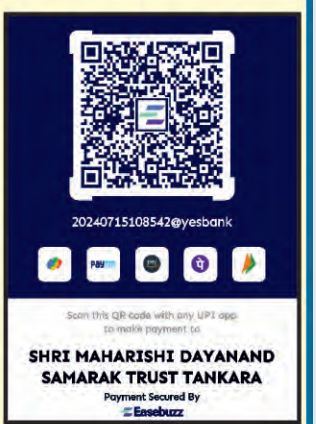

–:निवेदक:–

योगेश मुंजाल
कार्यकारी प्रधान

अजय सहगल
मन्त्री (मो. 9810035658)

उपकार्यालय: आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 सम्पर्क: 09560688950 (व्यवस्थापक)

वैदिक धर्म दुःखों से रक्षार्थ सत्य को ग्रहण करने की प्रेरणा करता है

❑ मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य का जो ज्ञान होता है वह सत्य व असत्य दो कोटि का होता है। मनुष्य के कर्म भी दो कोटि यथा सत्य व असत्य स्वरूप वाले होते हैं। अनेक स्थितियों में मनुष्य को सत्य को अपनाने से क्षणिक व सामयिक हानि होती दीखती है और असत्य का आचरण करने से लाभ होता दीखता है। बहुत से मनुष्य अपने लाभ के लिये सत्य को छोड़ असत्य में प्रवृत्त हो जाते हैं। ऐसा करना वैदिक धर्म की मान्यताओं एवं सिद्धान्तों की दृष्टि से उचित नहीं होता। इसका कारण यह है कि परमात्मा सत्य में स्थिति हैं। वह सत्य-चित्त-आनन्दस्वरूप हैं। परमात्मा असत्य से युक्त कोई काम नहीं करते और न चाहते हैं कि कोई मनुष्य असत्य का आचरण, व्यवहार व कर्मों को करे। सत्य व्यवहार करने वाले मनुष्य सत्य के आचरण के परिणामस्वरूप ईश्वर से सुख पाते हैं और असत्य का आचरण करने वाले दुःख पाते हैं। यह वैदिक सत्य सिद्धान्त् है। इसकी अनेक प्रमाणों एवं घटनाओं से पुष्टि होती है। अतः मनुष्यों को सत्य का ही आचरण करना चाहिये। जो मनुष्य अपनी अविद्या, स्वार्थ वा प्रयोजन की सिद्धि, हठ व दुराग्रह आदि से सत्य को छोड़ असत्य को अपनाते हैं व अपनाये हुए हैं, उन मनुष्यों को परमात्मा की व्यवस्था लोक-परलोक व जन्म-परजन्म में सुख के स्थान पर दुःख मिलता है। मनुष्य को असत्य व्यवहार तथा अशुभ कर्म करने से तत्काल कुछ लाभ होता दीखता है, अतः अविवेकी व अज्ञान से युक्त मनुष्य ऐसे कर्मों को करते हैं। इससे उन्हें इष्ट लाभ भी प्राप्त हो जाता है परन्तु इस कर्म का जब परमात्मा से फल प्राप्त होता है तो उसे अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं। इस कारण से किसी भी मनुष्य को जीवन में असत्य विचार, विश्वास, कर्म व निर्णय नहीं करने चाहियें अन्यथा जन्म व जन्मान्तर में असत्य व अशुभ कर्मों का फल भोगना होगा। वैदिक सिद्धान्त भी यही कहता है कि **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं'** अर्थात् मनुष्य को अपने किये हुए शुभ व अशुभ कर्मों के फलों का अवश्य ही भोग करना होता है। इस सत्य सिद्धान्त् को जानकर मनुष्य को असत्य का व्यवहार कदापि नहीं करना चाहिये।

ऋषि दयानन्द जी वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् व ऋषि थे। उन्होंने वेद प्रचार हेतु स्थापित संगठन आर्यसमाज के नियम बनाये जिसमें चौथे नियम में विधान किया कि 'मनुष्य को सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।' सत्य पर बल देते हुए उन्होंने पांचवे नियम में कहा है कि मनुष्य को अपने सभी काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये। उसे सत्य से युक्त कार्यों को करना चाहिये और असत्य से युक्त कार्यों को नहीं करना चाहिये। आर्यसमाज का एक अन्य महत्वपूर्ण नियम यह भी है कि मनुष्य को अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। सत्य का आचरण करने से ही देश व समाज में अविद्या का नाश हो सकता है तथा विद्या की वृद्धि होती है। असत्य सदैव अविद्या से युक्त तथा विद्या से वियुक्त रहता है। विद्या से ही मनुष्य की उन्नति व उत्कर्ष होता है। अविद्या से मनुष्य पतन में गिरता है। सत्य को अपना कर तथा असत्य को छोड़ने से ही देश व समाज में सुख, शान्ति व उन्नति हो सकती है। ऐसा होने पर भी मनुष्य व बहुत से ज्ञानी व विद्वान भी असत्य आचरण करना छोड़ते नहीं है। अनेक ज्ञानी व विद्वानों का सत्य आचरण की उपेक्षा करना आश्चर्य की बात है। यदि संसार में सभी लोग सत्य के ग्रहण करने में दृढ़ निश्चय हो जायें तो पूरे विश्व में धार्मिक व सामाजिक एकता स्थापित हो सकती है। एकता न होने का कारण असत्य का व्यवहार तथा अविद्या ही है। इसी कारण ईश्वर के साक्षातकर्ता ऋषि दयानन्द जी ने सत्य व विद्या के महत्व को आर्यसमाज के नियमों में समाविष्ट किया है।

वेद परमात्मा का ज्ञान है। यह ज्ञान सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सत्य-चित्त-आनन्दस्वरूप परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को दिया था। इस ज्ञान को सर्वान्तर्यामी परमेश्वर ने इन ऋषियों की आत्मा में अन्तःप्रेरणा कर स्थिर किया था। परमात्मा ने ही इन ऋषियों को वेदों की भाषा के ज्ञान सहित वेदों के मन्त्रों के अर्थ भी जनाये थे। इनके द्वारा ब्रह्माजी को ज्ञान देने सहित वेद अध्ययन अध्यापन की परम्परा सभी मनुष्यों में आरम्भ हुई थी। महाभारत से पूर्व विश्व के सभी लोग एक वेद मत को ही मानते व इसका ही आचरण करते थे। इसका एक कारण महाभारत से पूर्व देश देशान्तर में ऋषि परम्परा का प्रचलित होना था। इस वैदिक काल में संसार में धर्म विषयक अविद्या पर नियंत्रण था। सर्वत्र विद्या व वेदों का प्रकाश हमारे ऋषि व उनके शिष्य करते थे। वेदों का अध्ययन करने पर वेद सब सत्य विद्याओं से युक्त ग्रन्थ सिद्ध होते हैं। वेदों की सभी मान्यतायें सत्य पर आधारित एवं सत्य सिद्धान्तों से पुष्ट हैं। ऋषि दयानन्द ने वेद व वैदिक मान्यताओं की सत्यता को सिद्ध करने के लिये ही वेद प्रचार किया और इसको स्थायीत्व प्रदान करने के लिये उन्होंने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद आंशिक तथा यजुर्वेद सम्पूर्ण वेदभाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया। वह वेदभाष्य का कार्य कर रहे थे, उसी बीच उन्हें जोधपुर में विष दिए जाने से उनकी मृत्यु हो गई थी। यदि विष व मृत्यु की यह घटना न घटती तो वह कुछ वर्षों में चारों वेदों का भाष्य पूर्ण कर लेते। उनकी असमय मृत्यु से चारों वेदों के भाष्य का महान् उपकार का कार्य उनके द्वारा पूरा न हो सका। उनके द्वारा रचित सभी ग्रन्थों में सर्वत्र सत्य ही विद्यमान है जिनका अध्ययन कर कोई भी मनुष्य सर्वांश में सत्य से परिचित होकर सत्य आचरण व व्यवहार में प्रवृत्त हो सकता है। ऐसा करके ही आर्यसमाज को स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, पं. चमूपति तथा पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय आदि सत्याचरण करने वाले अनेक महानपुरुष व महात्मा प्राप्त हुए थे। ऋषि दयानन्द और इन महापुरुषों के जीवन की घटनाओं का अध्ययन करने पर इनका जीवन सत्याचरण से युक्त सिद्ध होता है और इनसे पाठकों को सत्याचरण करने की प्रेरणा मिलती है।

वैदिक धर्म में मनुष्य को अपने प्रत्येक कर्म को सत्य पर आधारित करने की प्रेरणा मिलती है। उसे कहा जाता है कि वह मन, वचन व कर्म से सत्य का आचरण व पालन करे। सत्याचरण ही धर्म का पर्याय है। जहां सत्य का आचरण नहीं होता वहां धर्म नहीं होता। सत्य में शाकाहार का सेवन भी जुड़ा हुआ है। शाकाहार सत्य से युक्त आचरण है और मांसाहार असत्य से युक्त एवं निन्दित कार्य होता है। यह भी

उल्लेखनीय है कि सत्य के सर्वाधिक महत्व के कारण ही ऋषि दयानन्द ने वैदिक मान्यताओं पर लिखे अपने ग्रन्थ का नाम सत्यार्थप्रकाश रखा। उन्होंने सत्य के निर्णयार्थ वेद की प्रायः सभी प्रमुख मान्यताओं को सत्यार्थप्रकाश के आरम्भ के 10 समुल्लासों में प्रस्तुत कर इसके बाद उत्तरार्ध के 4 समुल्लासों में सभी मत-मतान्तरों के सत्यासत्य की परीक्षा व समीक्षा की है। उन्होंने ऐसा करते हुए पूर्णतः निष्पक्ष होकर सभी मतों में असत्य एवं अविद्यायुक्त मान्यताओं का दिग्दर्शन भी कराया है। अविद्या से सम्पृक्त कोई भी मत व सिद्धान्त विष से युक्त भोजन के समान त्याज्य होता है। विवेक व ज्ञान से युक्त मनुष्य ऐसा ही आचरण करते हैं और अतीत में भी प्रायः सभी मतों के अनेक विद्वानों ने सत्य को अपनाते हुए वैदिक धर्म को स्वीकार किया है। ऐसा करने से मनुष्य सत्य धर्म का पालन करने वाले बनते हैं और धर्मपूर्वक अर्थ का संचय एवं अपनी मर्यादित कामनाओं को सिद्ध करते हुए वह मृत्यु के पश्चात् जन्म व मरण से छूटकर आत्मा में निरन्तर आनन्द की स्थिति 'मोक्ष' को प्राप्त होते है।

संसार में जो मनुष्य अपने जीवन में सत्य का सम्पूर्णता से आचरण नहीं करते उनके दुःखों का कभी अन्त नहीं होता व हो सकता है। यदि हम चाहते हैं कि हमें कभी किसी प्रकार का दुःख व कष्ट न हो, तो हमें सत्य का आचरण करते हुए वेद के सत्यस्वरूप को जानकर उसी के अनुरूप व्यवहार करना होगा। वैदिक धर्म असत्य व मिथ्या मान्यताओं, पाखण्ड, आडम्बरों, अविद्या व अन्धविश्वासों से सर्वथा मुक्त है, उसे सभी मनुष्यों को अपनाना होगा। इस मार्ग पर चलकर ही धर्म मार्ग के पथिक को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष प्राप्त होंगे। सन्ध्या में समर्पण मन्त्र में कहा जाता है 'हे ईश्वर दयानिधे! आपकी कृपा से जप और उपासना आदि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें।' धर्म और उपासना का सत्य से निहित तथा असत्य से सर्वथा पृथक होना अत्यावश्यक एवं अपरिहार्य है। जिन मनुष्यों की उपासना व व्यवहार आदि में सत्य की न्यूनता तथा असत्य का समावेश होता है वह कभी दुःखों से सर्वथा मुक्त व मोक्ष को प्राप्त नहीं हो सकते। अतः मनुष्य को दुःखों से मुक्त होने, जीवन की सफलता व सुखों की उपलब्धि के लिये सत्य को जानकर सत्य का ही व्यवहार करना चाहिये और सत्यपालन के लिए कष्ट उठाने में तत्पर रहना चाहिये क्योंकि सत्य पालन का अन्तिम परिणाम सुख व आनन्द की प्राप्ति होता है।

वैदिक धर्म सत्य ग्रहण कराने तथा असत्य छुड़ाने का पर्याय सत्य मत व धर्म है। इसके लिये हमें ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश आदि सभी ग्रन्थों व वेदभाष्य का अध्ययन कर उसके अनुकूल आचरण व व्यवहार करना चाहिये। ऐसा करके ही हम मनुष्य होने की अपनी सत्ता को सार्थकता प्रदान कर सकते हैं। मनुष्य को यह भी ध्यान रखना चाहिये अन्तिम विजय सत्य की ही होती है। इसलिए सत्य से विलग कदापि नहीं होना चाहिये।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोनः 9412985121

ऋषि वचन

- जैसे परमेश्वर के अनन्त गुण कर्म स्वभाव हैं वैसे उसके अनन्त नाम भी हैं।
- ओ३म् शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है।
- जहाँ जिसका ग्रहण करना उचित हो वहाँ उसी अर्थ का ग्रहण करना चाहिये।
- श्रेष्ठ उसको कहते हैं जो गुण, कर्म, स्वभाव और सत्य व्यवहारों में सबसे अधिक हो। उन सब श्रेष्ठों में भी जो अत्यन्त श्रेष्ठ है उसको परमेश्वर कहते हैं। जिसके तुल्य कोई न हुआ, न है और न होगा। (सत्यार्थप्रकाश समु. 1)

टंकारा समाचार सम्बन्धी घोषणा

फार्म-4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन का स्थान	: नई दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक का नाम	: अजय सहगल
4.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
5.	मुद्रक का पता	: श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट (टंकारा) आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001
6.	प्रकाशक का नाम	: अजय सहगल
7.	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
8.	प्रकाशक का पता	: श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट (टंकारा) आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001
9.	सम्पादक का नाम	: अजय सहगल
	क्या भारत का नागरिक है?	: हाँ
	सम्पादक का पता, उन व्यक्यिों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों:	आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

मैं अजय सहगल एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 1.03.2025

अजय सहगल, प्रकाशक एवम् सम्पादक

(पृष्ठ 11 का शेष)

क्योंकि इनके द्वारा मनुष्य दु:खसागर से तर जाता है। उससे पार हो जाता है। नौका, जहाज आदि भी इसी श्रेणी में आते है। पूर्व-काल में पर्वत की उपत्यकाओं, कन्दराओं, नादियों के, संगमस्थलो और प्रसिद्ध एवं उपयोगी स्थलों पर ऋषि-मुनियो के आश्रम हुआ करते थे, उस काल में साधारण गृहस्थ मनुष्य अपने दैनिक जीवन से कुछ समय निकाल कर उन ऋषि -मुनियों के दर्शन और प्रवचनो तथा उपदेशो से लाभ उठाने के लिए उन स्थलो की यात्रा किया करते थे, उसको तीर्थ यात्रा कहा जाता था। ऋषि-मुनियों के सम्पर्क और संसर्ग से भी भवसागर से तरने का मार्ग प्रशस्त करते थे। काल क्रम से ऐसे योगी, यति, सिद्धपुरूषों का उन स्थानों पर उन ऋषि-मुनियों के वह वंशज तो प्रतापी, यशस्वी और तेजस्वी न हों कर साधारण जीवन व्यतीत करने वाले होते है। ऐसे उन वंशजों ने स्वयं तो तप, योग, ध्यान आदि का अभ्यास त्याग दिया है, किन्तु अपने पूर्वजो के और उन स्थानों की यात्रा करने से पुण्य आदि लाभ प्राप्त करने के अतिशयोक्तिपूर्ण महात्म्य ग्रन्थ यथा- काशी-महात्म्य, मथुरा-महात्म्य आदि रचकर उन स्थानों की महिमा मण्डित कर अपनी दुकान चलानी आरम्भ कर दी है। आज का सामान्य जन-मानस उन पर आस्था रख कर तीर्थ-यात्रा अथवा उन स्थानों के दर्शन मात्र से ही पाप मुक्ति मानने लगे है। यथार्थ में यदि देखा जाय तो वहां मात्र दुकानदारी ही रह गई हैं। अनेक भोले-भाले यात्री तो ऐसे तथाकथित तीर्थस्थानों पर धर्म के कुत्सित ठेकेदारों के हाथो लुट-पिट कर आते और फिर पश्चाताप् भी करते है। क्यों कि ऐसा कौन सा कदाचार है उन स्थानो और उन ठेकेदारों के लिये हैं।

यह स्पष्ट कर देना समीचीन होगा कि किसी स्थान अथवा संगम या तीर्थ-विशेष पर प्राण त्यागने से मनुष्य को मुक्ति प्राप्त हो जाती है। इसके नियमित तो अनेक जन काशी-मथुरा,वृन्दावन जैसे स्थान अपनी अन्तिम जीवन के दिन व्यतीत करने के लिए वहां निवास कर लेते है। ऐसे स्थानों के ठेकेदारों ने उन स्थानों पर मरण पर मुक्ति मिलने का प्रचलन कर दिया है। जैसे **'काश्याम्मरणात् मुक्तिः'** अर्थात काशी में मरने से मुक्ति मिलती है। ऐसे किसी भी स्थान पर मृत्यु होने से प्राणी को न तो पापों से मुक्ति मिलती है और न उसकी सद्गति ही होती है।

मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति ने यदि जीवन में कभी भी सत्कर्म न किये हों तो अन्त में किसी भी स्थान पर प्राण त्यागने से कोई लाभ नहीं होता। ईश्वर न्यायकर्ता है और वह जीव को उसके कर्मानुसार ही फल देता है। तीर्थस्थान पर प्राण छूटने आदि का कर्म-फल प्राप्ति में कोई कारण नहीं है। यथा- किसी सैनिक द्वारा अपनाकर्त्तव्य भली प्रकार यथार्थ रूप में निभाने के कारण यदि उसकी किसी विधर्मी, पापात्मा-शत्रु के हाथों भी मृत्यु हो गई तो भी प्राण छूटने पर उसको सद्गति ही प्राप्त होगी। इसके विपरीत जीवन भर पाप करने वाले की यदि- 'काशी' आदि कथित तीर्थस्थानों पर मृत्यु हो जाय तो उसको उसके पापो के फलस्वरूप जन्मान्तर में दु:ख आदि फल अथवा दुर्गति अवश्य प्राप्त करना पड़ेगा। न किसी स्नान विशेष पर मृतक के दाह किये जाने पर इस न्याय नियम में किसी प्रकार का परिवर्तन होगा।

पाप-पुण्य के फल से कुम्भ आदि स्नान और तीर्थस्थलों की यात्रा का कोई संबंध नहीं है। पवित्र नदियां आदि में स्नान अथवा तीर्थस्थलो की यात्रा से मनुष्य कुछ समय के लिये जलवायु परिवर्तन का सुख-दु:ख भोग लेगा। तीर्थयात्रा भी पर्यटन के रूप में यात्री को नये-नये स्थानों का परिचय मिलेगा, जानकारी मिलेगी और बुद्धि का विकास होगा। इसके अतिरिक्त इन यात्राओं का अन्य कोई लाभ नहीं।

- 385, साइट-1, विकासपुरी, नई दिल्ली-18

वैदिक दृष्टिकोण

ઋગ્વેદના સમયગાળાનો સમાજ ખેતી આધારિત હતો. ઈન્દ્ર, અગ્નિ જેવા દેવોને આહુતિ વડે ખુશ કરીને સુખાકારીની કામના કરવાની વૈદિક પ્રથા સાથે સમાજજીવન પણ આબાદ જોડાયેલું છે. હોળીના ઉત્સવમાં આજે પણ તેનું પ્રતિબિંબ વર્તાય છે. ફાગણ મહિનો એ બે ઋતુના સંધિકાળનો મહિનો છે. એ સમયે શિયાળો ઊતરી ચૂક્યો હોય અને ઉનાળાનું આગમન થવામાં હોય એવા આ મિશ્ર ઋતુના સમયે રોગજન્ય કીટાણુઓ હવામાં ઘૂમરાતા હોય છે. વળી, આ જ સમયગાળામાં રવી પાક ખેતરમાં ઊતરીને ખળા ભણી જઈ રહ્યો હોય ત્યારે ખેતઉપજ સાથે ચોંટેલા કીટાણુ પણ રહેઠાણ વિસ્તારમાં ગતિ કરતા હોય. એવે સમયે સ્વાસ્થ્યને અને ધાર્મિક આરાધનાને ધ્યાનમાં રાખીને વૈદિકકાળમાં આ પર્વને નવાન્નેષ્ટિ યજ્ઞના નામે ઉજવવામાં આવતું હતું. ખેતરમાં પાકેલા અનાજને સામૂહિક રીતે પ્રગટાવેલા વિરાટ યજ્ઞની ભભૂકતી પાવક જ્વાળાઓમાં આહુતિ આપવામાં આવતી અને એ રીતે અનાજને પવિત્ર બનાવવામાં આવતું. એ પછી અગ્નિમાં તુલસી, કંદ, જ્યેષ્ઠિમધુ, દર્ભ, લીમડાનાં લાકડાં જેવી વનસ્પતિ, ઔષધિની આહુતિ વડે પ્રગટતા ધુમાડાથી હવામાં ઘૂમરાતા આરોગ્ય માટે હાનિકારક એવા કીટાણુઓનો નાશ પણ થતો. આમ, હોળીના આ પર્વ સાથે વૈદિકકાળના મંત્રદ્રષ્ટા ઋષિઓએ સામૂહિક સ્વાસ્થ્યની ખેવના પણ વ્યક્ત કરી છે. અન્નને 'હોળા' કહેવામાં આવે છે. એ રીતે આ ઉત્સવને હોળિકોત્સવ તરીકે પણ ઓળખવામાં આવતો. ઉનાળાના પ્રારંભે વસંતઋતુના આગમનને સાંકળીને શરીર તેમજ મનને તરોતાજા કરવાના પ્રયાસ સ્વરૂપે રંગોની રસલ્હાણ કરીને સામાજિક સહચર્યની ભાવના ઉજાગર કરવાનો પણ અહીં પ્રયાસ હતો. વૈદિક માન્યતા મુજબ, આ દિવસે પ્રથમ પુરુષ મનુનો જન્મ થયો હતો. આથી તેને મન્વાદિતિથિ પણ કહે છે.

હોળીની જ્વાળા અને વરસાદની આગાહી

હોળીની જ્વાળા કઈ દિશામાં પ્રસરે છે તેના આધારે આગામી ચોમાસાની આગાહી કરવાનું લોકવિજ્ઞાન પ્રચલિત છે. સાધારણ રીતે ફાગણ મહિનાના સમયગાળા દરમિયાન સમીસાંજે પવનની દિશા ઉત્તર તરફની હોય છે, પરંતુ જો હોળીના દિવસે પવનની દિશા ઉત્તર-પૂર્વ તરફની હોય તો વરસાદ સારો, સ્થિર અને મંદ જ્વાળાઓ હોય તો વરસાદ મધ્યમ અને ગોળ ઘૂમરાતી તોફાની જ્વાળાઓ હોય તો અતિવૃષ્ટિ કે અનાવૃષ્ટિ થાય તેવી લોકમાન્યતા છે.

ફાગણ સુદ પૂર્ણિમાને હુતાશણીના નામે પણ ઓળખવામાં આવે છે. ગુજરાત, રાજસ્થાન, મહારાષ્ટ્ર સહિત સમગ્ર ભારતમાં હોળી-ધુળેટીનો તહેવાર ધામધૂમથી મનાવવામાં આવે છે. હોળી એક રીતે ધાર્મિક, સામાજિક અને વૈજ્ઞાનિક રીતે ત્રિવેણીસંગમ છે. હોળીનું ધાર્મિક મહત્ત્વ તો સૌ કોઈ જાણે છે. અન્ય તહેવારોની જેમ હોળી પણ આસુરી શક્તિ પર દૈવી શક્તિના વિજયનું પર્વ છે. વૈજ્ઞાનિક દૃષ્ટિકોણથી હોળી મહત્ત્વની એ રીતે છે કે હોળી પ્રગટાવ્યા પછી તેની ઝાળ જોઈને હવે પછી ઋતુ કે હવામાન કેવાં રહેશે તેનું અનુમાન મેળવાય છે. જેને વરતારો કહે છે. હોળીમાં ધાણી, નારિયેળ, કપૂર સહિતની વિવિધ વસ્તુઓમાં નાખવામાં આવે છે, તે વાતાવરણમાંના વિષાણુઓનો નાશ કરે છે અને વાતાવરણને શુદ્ધ કરે છે. સામાજિક દૃષ્ટિકોણથી જોઈએ તો હોળી વિવિધ રંગોમાં રંગાઈને સામાજિક સમરસતાનું મહત્ત્વ દર્શાવે છે. તે પરસ્પરની શત્રુતા ભૂલીને ભાઈચારાની ભાવના સિદ્ધ કરે છે. બાળકો પિચકારી અને રંગોથી એકબીજાને રંગીને આનંદ મેળવે છે.

Believe
you can and
you`re halfway there.

टंकारा समाचार मार्च 2025

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2024-25-26

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2024-26

Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-06 on 1/2-03-2025

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.02.2025

सफलता के 6 मूल मंत्र

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक–अजय सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय